647510 **0101203F1010** **Seat No :_____**

B.A. Semester - 2 (*CBCS*) Examination
March/April - 2024 (As Per Syllabus Year-2016)
FOUNDATION HINDI (FOUNDATION)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न-१ मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व एवम् कृतित्व का परिचय दीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न-१ 'पंचवटी' का कथासार अपने शब्दों में बताते हुए संदेश स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न-२ खंण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' की समीक्षा कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न-२ 'पंचवटी' खंण्डकाव्य में व्यक्त आधुनिक युगबोध पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न-३ भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से 'पंचवटी' काव्य का मूल्यांकन कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न-३ 'पंचवटी' काव्य के आधार पर सीता का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

प्रश्न-४ 'पंचवटी' काव्य की मूल कथावस्तु बताते हुए गुप्त जी द्वारा किये गये परिवर्तनों की चर्चा कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न-४ 'पंचवटी' काव्य के आधार पर गुप्त जी की नारीभावना पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न-५ (अ) पल्लवन कीजिए । (०७)

१) विपति ही मित्रों की कसौटी है ।

अथवा

१) प्रतिभा परिश्रम से चमक उठती है ।

प्रश्न-५ (ब) संक्षेपण कीजिए: (०७)

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को जीवन से पूर्णतया तैयार करना है । आज की शिक्षा तो पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करके ही अपने कर्तव्य की इतीश्री समझती है । शिक्षार्थी को जीवन-जगत से न परिचित किया जाता है और न उसे वास्तविक समस्या को सुलझाते योग्य बनाया जाता है । आज की शिक्षा सचमुच अव्यवहारिक है । पुस्तकीय ज्ञान सम्बन्धी बातों के अतिरिक्त वह कुछ नहीं जानता । इसके फलस्वरूप राष्ट्र की अपार क्षति होती है । जब नवयुवक वास्तविक जीवन में प्रवृत्त होता है । तब उसकी दशा एक साधनहीन यात्री जैसी हो जाती है । उस समय वह अपने को अपार संसार सागर के किनारे पाता है । ऐसी दशा में वह कर्तव्यविमूढ होकर अपने निरर्थक जीवन को कोसता है ।

अथवा

मेरी समझ में केवल मनोरंजन काव्य का साध्य नहीं है । कविता पढते समय मनोरंजन अवश्य होता है । मनोरंजन करना कविता का प्रधान गुण है, जिससे वह मनुष्य के चित को अपना प्रभाव जमाने के लिए वश में किये रहती है, उसे इधर-उधर जाने नहीं देती । यही कारण है, कि नीति और धर्म-सम्बन्धी उपदेश चित पर जैसा प्रभाव नहीं जमा सकते, जैसा कि काव्य या उपन्यास से निकली हुई शिक्षा असर करती है । कविता अपनी मनोरंजन शक्ति द्वारा पढने या सुननेवाले का चित चिहने नहीं देती, उसके ह्रदय के मर्म-स्थानों का स्पर्श करती है और सृष्टि में मानवी गुणों का प्रसार करती है ।

****